Dr. Madan Paswan, History. | Lecture No. 11 (1)
Class: B.A. Part-II CHGP-IIIrd. | Date: 07.11.2020
Topic: Unit-II (C) Md. Bin Tughlq. | Continue Lecture...

मुहम्मद बिन तुगलक के लिए दक्षिण बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ। चूँकि वह दक्षिण की समस्याओं से अवगत था, अतः उसने दक्षिण पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से देवगिरि में राजधानी परिवर्तन किया। यह योजना भी विफल सिद्ध हुई। जिसमें — (क) शासन में भ्रष्टाचार के साथ राजस्व में कमी हो गई जिससे प्रशासन अव्यवस्थित हो गया।

(ख) सभी विघटनकारी शक्तियाँ इतनी प्रबल हो गई कि सुल्तान न तो दक्षिण को ही संभाल सका और न ही उत्तर को।

फलतः सुल्तान की सत्ता का अन्त हो गया। दक्षिण के विद्रोहों का प्रभाव उत्तरी भारत पर भी पड़ा और मालवा, गुजरात तथा सिंध में अशांति फैल गई।

इस प्रकार, मुहम्मद बिन तुगलक की दक्षिण नीति असफल सिद्ध हुई।

(ग) मुहम्मद तुगलक के उत्तराधिकारियों ने दक्षिणी राज्यों से युद्ध नहीं किया क्योंकि वे असक्षम थे। खिलजी काल में दक्षिण के सभी राजाओं ने सुल्तान का प्रभुत्व स्वीकार किया। किंतु उनके लिए इतनी दूरी से सीधा नियंत्रण करना संभव नहीं था।

(घ) अतः अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिणी शासकों को केवल अपना आधिपत्य स्वीकार कराने के बाद और उनसे राजकर देने का वचन लेकर छोड़ दिया।

(ङ) जबकि तुगलक शासकों ने सल्तनत को सुसंगठित करने के लिए दक्षिण के विभिन्न राज्यों को अन्य प्रांतों की भाँति साम्राज्य में मिलाना आवश्यक समझा जिससे एकसमान शासन व्यवस्था कायम किया जा सके।

दक्षिण नीति के परिणामस्वरूप दक्षिण भारत में संचित धन राशि का बड़ा हिस्सा उत्तर भारत में चला गया जिसका उपयोग सुल्तानों ने साम्राज्य विस्तार, शासन सुधार तथा कला

एवं साहित्य के प्रोत्साहन में किया। इसके अतिरिक्त उत्तरी तथा दक्षिणी भारत एक-दूसरे के निकट आये और इस्लामी संस्कृति का दक्षिण में प्रसार हुआ।